Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(*https://jetjournal.us/*)
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 1
Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

महिला विकास यात्रा में नारी चेतना की भूमिका – (सुधा अरोड़ा का आलेख 'आर्थिक आत्मनिर्भरता सामाजिक बदलाव की पहली शर्त' के संदर्भ में)

राजेंद्र वसंत मोरे, शोध छात्र, क. ब. चौ. उ. म. वि. जलगाव, KBCNMU/11/Ph.D./Hin/424/2020
प्रा. डॉ. प्रमोद गोकुळ पाटील, शोध मार्गदर्शक, स्नातकोत्तर हिंदी विभाग एवं संशोधन केंद्र, श्री. शिवाजी विद्या प्रसारक संस्था का. ना. स. पाटील साहित्य एवं मु. फि. मु. अ. वाणिज्य महाविद्यालय, देवपुर, धुले, जिला. धुले (महाराष्ट्र)

सारांश

मानव जीवन अनेक महान उद्देश्यों से बना हुआ है। इस मानव जीवन के स्त्री और पुरुष अभिन्न घटक है, इन दोनों का पर्याप्त और संतुलित विकास होना समाज के लिए महत्वपूर्ण है । साहित्य प्राचीन काल से ही मनुष्य का पथ प्रदर्शक रहा है तथा उसे उचित-अनुचित से हमेशा ही सचेत करता रहा है। साहित्यिक चेतना के माध्यम से सचेत और वैज्ञानिक जीवन की नींव रखी गई है। आधुनिक काल अनेक समस्या लेकर आया है जैसे बेरोजगारी,अशिक्षा, भ्रष्टाचार , अत्याचार गरीबी,जनसंख़या वृद्धि, पारिवारिक क्लेश,सामाजिक क्लेश, मानसिक बीमारियां भर भर भ्रष्टाचार अत्याचार गरीबी आदि। साहित्य में स्त्री चेतना के माध्यम से महिला विकास यात्रा में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है। स्त्री का शिक्षित होना। शिक्षित होकर आत्मनिर्भर होना यह वर्तमान समय में बेहद जरूरी है।जो समाज आत्मनिर्भर है ,वह समाज उतना ही प्रगति, स्थिर व वैचारिक दृष्टि से उतना ही उन्नत है।

संबोध शब्द :- परिवर्तनशील, आत्मनिर्भरता, विघटन, उत्थान, मुखर, विवाह-विच्छेद, नवनिर्माण, सचेत समाज।

प्राक्कथन

संसार गतिशील और परिवर्तनशील है ,इसलिए कहा जाता है कि परिवर्तन समाज का नियम है । सृष्टि का निर्माण अनेक घटकों से हुआ है निर्माण और विघटन का कार्य हजारों वर्ष से इस जीव सृष्टि पर चल रहा है लेकिन इस विघटन और निर्माण के कार्य में मानव हमेशा ही केंद्र में रहा है। जब-जब मनुष्य ने अपना स्वास्थ्य सिद्ध करना चाहा तब तब संसार का विघटन और विनाश हुआ । संसार व समाज का सामाजिक, आर्थिक, नैतिक एंव सांस्कृतिक पतन और नाश हुआ है । इसके विपरीत मनुष्य विकासशील, वैज्ञानिक और संतुलितजीवन से प्रगति पर पद पर चलने की कोशिश ने की है तब तक मनुष्य का उत्थान व विकास हुआ है।संसार के गतिशील और चेतनशील घटक यानी स्त्री - पुरुष यह दोनों मानव जीवन के महत्वपूर्ण अंग है । संसार ,समाज और संस्कृति को संतुलित व ऊर्जादायी बनाने में उनका असधारण महत्व है ,लेकिन इन दो घटकों की विकास यात्रा पर नजर डालोगे। तो आपको अनेक अवरोध दिखाई देंगे , जिस समाज में इन घटकों के विकास में कम योगदान है, उसे समाज एवं देश का विकास क्रम उतना ही धीमा है ।इसके विपरीत जिसकी विकास यात्रा जितनी गतिशील और निरंतर वह समाज एवं देश नवनिर्माण के लिए उतना ही सचेत और प्रेरणादाई है ।मानव जीवन का लक्ष्य, मात्र जीवित रहना नहीं है । तो एक सचेत ,चैतन्यमय जीवन जिए तथाअन्य प्राकृतिक घटकों के साथ भी उसका वर्तन वैसा ही हो।

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 1
Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

जो प्रकृति और मानव को संतुलित बनाए रखें। नारी- पुरुष यह सृष्टि तथा समाज के प्रमुख घटक है लेकिन पूराकाल से विचार किया जाए ,तो दोनों का विकास क्रम भिन्न रहा है । देश कल, वातावरण, भौगोलिक, सामाजिक ,आर्थिक व सांस्कृतिक भूमिकाएँ इसके लिए आधार रही है । इस आधार पर हम इनका संतुलन देख सकते हैं यह भी हो सकता है वह जागरूकता जो समाज को उन्नत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं ।जो समाज का घटक जितना जागरूक तथा सचेत होगा । वह समाज उतना ही विकास के दौर में उन्नत होगा मानव जीवन में चेतना का एकअनोखा स्थान है क्योंकि समाज के जिस घटक में चेतना का संचार हुआ है ।वह विकास के पथ पर चल पड़ा है एवं इस गतिशील प्रक्रिया में चेतना निरंतर काल से अहम भूमिका निभाती आ रही है।

शोध विवेचन

आधुनिक रचनाकारों ने स्त्री विकास यात्रा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है । इसके परिणाम स्वरुप प्राचीन काल से वर्तमान तक आधुनिक काल स्त्री उत्थान के लिए विशेष गति प्रदान करता नजर आता है। इसमें महिला रचनाकारों का कार्य भी विशेष महत्व रखता है । इसी श्रेणी की मुखर कहानीकार सुधा अरोड़ा अपनी विशिष्ट लेखन प्रणाली के साथ वर्तमान नारी जीवन से परिचित व सचेत भी करती है । उन्होंने अपने लेखन में कहानी, कविता, स्तंभ लेखन तथा साहित्य की अनेक विधाओं के माध्यम से स्त्री में ऊर्जा जगाने का कार्य किया है।लेखन के साथ एक सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में प्रचलित है। हेल्प नामक संस्था के माध्यम से उन्होंने अनेक महिलाओं की समस्या को जाना तथा उन समस्याओं को दूर करने के लिए पुरी ताकत से हर संभव प्रयास किया। स्त्री विकास में जो भी घटक आडे आए उन पर उन्होंने प्रहार किया तथा नारी विमर्श व समस्याओं के प्रति हमेशा एक जागृत रचनाकार के रूप में उनको देखा, तथा जागरूक रचनाकार के रूप में सक्रिय रही है। इस संदर्भ में उनका मंतवय विशेष उल्लेखनीय है – ""किसी भी लड़की के लिए आर्थिक आत्मनिर्भरता अपने लिए आजादी और इज्जत कमाने की पहली शर्त है ।अपने पांव पर खड़े होने के लिए सबसे पहली जरूरत है शिक्षित होना ।"[1] स्पष्ट करता है कि समाज का निर्माण में सभी घटकों का योगदान है लेकिन उन घटकों का आत्मनिर्भर होना उतना ही जरूरी है । प्राचीन काल से ही नारी को अनेक ऊंचे संबोधनों से नवाजा गया लेकिन अनेक स्थानों पर जहां उसकी स्थिति प्रतिकूल थी। वहाँ उतना ही गहरा शोषण उसके साथ हुआ । वर्तमान काल विज्ञान और अपेक्षाओं काल है और इसकी अपनी समस्याएं भी है और अपेक्षाएं भी है। इन अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए सबसे जरूरी है मनुष्य का और स्त्री का आत्मनिर्भर होना। यह आत्मनिर्भरता समाज में सामाजिक बदलाव व परिवर्तन की पहचान है। इसी हेतु शिक्षा मुख्य रूप से अनिवार्य है।

नारी विकास हेतु महिलाओं को सचेत कर समाज में उसका यथा योग्य स्थान निर्माण करना एक सशक्त समाज की नींव रखता है ।इस संदर्भ में सुधा जी का एक संदर्भ विशेष अर्थ रखता है "वह आडे वक्त आपने पति की आर्थिक दया से अलग अपने पैरों पर खड़ी हो सके ,उसके और उसके पति के बीच एक मालिक और गुलाम का रिश्ता न रहे , जो अतः स्वामी या मालिक की मर्जी से ही परिचालित होता है।"2 वर्तमान समाज में अनेक समस्या है। महंगाई बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, बलात्कार, विवाह-विच्छेद तथा पारिवारिक क्लेश मानसिक बीमारियां फाड़ रही है ऐसे समय में अनेक बार महिलाओं को अनेक सामाजिक तथा आर्थिक समस्याओं से गुजरना पड़ता है ऐसे कठिन समय में उसका अपने पैरों पर खड़ा होना उसे संघर्ष के काबिल बनता है। वास्तविकता यही है कि सभारंत महिला हो या गरीब । जब तक वह आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर नहीं है ,तब तक महिलाओं के साथ समाज को भी पूर्ण रूप से हम प्रगति मन नहीं सकते। क्योंकि नारी अगर

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 1
Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

समाज और परिवार का अभिन्न अंग है। तो वह सक्षम होना स समाज के लिए बेहद जरूरी है। तभी हम भारत को विश्वसत्ता के रूप में देख सकते हैं, क्योंकि समाज के हर घटक को उतना सक्षम सशक्त बनाना होगा। एक अन्य वक्तव्य में सुधाजी की रहती है " दोनों एक दूसरे के साथी और सहयोगी बनकर रहें , इसके लिए जरूरी है कि घर गृहस्थी के कार्यक्षेत्र का बंटवारा भी सानुपातिक हो।"[3] संसार रूपी सिक्के के स्त्री-पुरुष दोनों विभिन्न अंग है। इन दोनों में संतुलन बनाए रखना स समय की मांग है ।क्योंकि स्त्री अगर पुरुष की सहयोगी है ,तो जीवन के हर क्षेत्र में उसका योगदान तथा उसकी आत्मनिर्भरता पूर्णत मायने रखती है। परिवार हो या समाज में पद,प्रतिष्ठा ,पैसा और पारिवारिक स्थिरता आत्मनिर्भरता से ही आती है।आधुनिक काल अपेक्षाओं का काल है। हर कोई सुख सुविधाओं की कामना करता है , हर कोई एक कुशल जीवन जीने की कामना करता है। ऐसे समय में अगर स्त्री आत्मनिर्भर नहीं होगी तो पुरुष का जीवन भी अनेक समस्याओं से संघर्षमय बन जाएगा। आज हम देख रहे हैं महानगरों की स्थितियां महंगाई तथा बेरोजगारी की समस्याएं फल-फूल रही है तथा जीवन के प्रति हमारा दृष्टिकोण बदल रहा है। इसीलिए इस संसार रूपी रथ को स्थिरता के साथ स्वस्थ समाज के निर्माण के लिए नारी का आत्मनिर्भर होना बहुत जरूरी है क्योंकि तभी एक खुशहाल जीवन और समास का नवनिर्माण किया जा सकता है । स्त्री चेतना के माध्यम से यह अहसास जगाना जरूरी है कि महिला विकास यात्रा में नारी का जागृत और सचेत होना तथा शिक्षित होना अनिवार्य है।

"महिलाओं के प्रति समाज की जो सोच है उसमें बदलाव आना चाहिए इसके लिए साहित्य, दृश्य, मीडिया, फिल्में, कानून तमाम क्षेत्रों में बड़े स्तर पर कोशिश की जा रही है।"[4] महिलाओं के विकास में समाज के हर स्तर से हर घटक का योगदान महत्वपूर्ण है क्योंकि अगर सभी को मुख्य धारा में संपूर्ण रूप से लाना है तो सभी को मिलकर काम करना होगा । इस विकास रूपी यात्रा को और प्रभावी ढंग से प्रवाहित करना होगा। समाज की सोच व समाज में बदलाव के स्रोत क्या है उनके माध्यम से क्या है ।साहित्य मीडिया कानून इनके द्वारा समाज में क्या परिवर्तन किया जा सकता है। वह किस तरह से महिला उन्नयन में अपना योगदान दे सकते हैं यह वर्तमान समय में जनसामान्य को समझना साहित्य, मीडिया और कानून के जानकारों को जरूरी है। अंततः तभी हम समाज में स्थायी और निरंतर उत्थान देख सकते हैं।

निष्कर्ष

1. समाज को उन्नत और प्रगत बनाने में स्त्री-पुरुष दोनों का विकास समान रूप से होना,एक संतुलित समाज की नींव हैं।
2. समाज को सचेत करने लिए चेतना बहुत जरूरी है। स्त्री चेतना के माध्यम से महिलाओं के जीवन में अनेक सामाजिक बदलाव आए हैं । स्त्री चेतना के माध्यम से संस्कृति का निर्माण किया जा सकता है।
3. स्त्री चेतना का स्वरूप समझना जरूरी है,तभी समाज का हर घटक मुख्यधारा से जुड़ सकता है। सत्ता के केंद्रीकरण से समाज समानता मानवता एकता का निर्माण नहीं कर सकता तथा समाज के निर्माण में वह बाधक है और दोषरहित समाज निर्माण नहीं हो सकती।
4. आधुनिक काल अनेक समस्याओं से घिरा हुआ है, अतः वर्तमानकाल में शिक्षित होना अनिवार्य है, क्योंकि शिक्षा के माध्यम से महिलाएं आत्मनिर्भर बन सकती है।
5. महिलाओं के विकास में स्त्री का सक्रिय योगदान महत्वपूर्ण है,जितनी महिलाएं सक्रिय होगी उतनी ही विकास यात्रा गतिशील और प्रेरणादाई होगी।

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 1
Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

6. एक उन्नत और प्रगति समाज के निर्माण के लिए स्त्री का योगदान सानुपातिक होना बहुत अहम भूमिका निभाता है।

संदर्भ सूचि

1. संपादक अरोड़ा सुधा, 2019, औरत की कहानी संस्करण-6, ज्ञानपीठ प्रकाशन- नई दिल्ली,वही पृष्ठ - 196
2. वही, पृष्ठ -197
3. वही, पृष्ठ - 197
4. अत्रि अनिल (संपादक), 2016, स्त्री-समय-संवाद,साहित्य भंडार इलाहाबाद - वही पृष्ठ - 186

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved